क्षेत्रीय कार्यालय
REGIONAL OFFICE
राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल,भीलवाडा
RAJASTHAN STATE POLLUTION CONTROL BOARD, BHILWARA
Email:-rorpcb.bhilwara@gmail.com
www.environment.rajasthan.gov.in

2025
International Year of Cooperatives

Registered Letter/Post

RPCB/RO BHL/Gen-39/Raj kaj Ref no. Date : As per E-sign

जिला कलक्टर महोदय,
भीलवाडा ।

**विषय: दैनिक भास्कर दिनांक** 06.02.2026 **को प्रकाशित समाचार "प्रदूषित पानी से 7 गांवों की 600 बीघा जमीन बंजर"सन्दर्भ में।**

**महोदय,**

उपरोक्त विषयांतर्गत निवेदन है कि दिनांक **06.02.2026** को दैनिक भास्कर समाचार पत्र में "**प्रदूषित पानी से 7 गांवों की 600 बीघा जमीन बंजर**" शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ था। उक्त सम्बन्ध में समाचार पत्र में समाचार में वर्णित स्थलों का मौका निरीक्षण एवं नमूने एकत्रीकरण इस कार्यालय के अधिकारियों द्वारा दिनांक **06.02.2026** को किया गया |

निरिक्षण रिपोर्ट इस पत्र के साथ सलग्न कर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु भिजवाई जा रही है । इसके अतिरिक्त यह रिपोर्ट अवलोकनार्थ, वस्त्र प्रसंस्करण इकाइयों के नियमन हेतु विकसित पोर्टल www.rspcbbhilwara.in पर भी अपलोड की जा रही है |

भवदीय,

(दीपक धनेटवाल)
क्षेत्रीय अधिकारी

प्रतिलिपि-

1. सयुक्त निदेशक , कृषि विभाग, भीलवाडा, को प्रेषित कर निवेदन है कि, उपरोक्त समाचार पत्र में वर्णित स्थान मेसर्स साईलीला प्रोसेसर के पास स्थित भूमि के बंजर होने के कारणों की जांच कर रिपोर्ट इस कार्यालय को भिजवाने का श्रम करावे ।
2. मुख्य चिकित्सा अधकारी, भीलवाडा, को प्रेषित कर निवेदन है कि उक्त समाचार पत्र में वर्णित क्षेत्र में स्वास्थय जांच केम्प लगवाकर, रिपोर्ट इस कार्यालय को भिजवाने का श्रम करावे ।
3. **GIC, Project Cell, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, जयपुर,** को प्रेषित करते हुए निवेदन है कि, इस सूचना को DIPR पोर्टल पर अपलोड करने का श्रम करावे ।
4. **Public Relation Officer (PRO), भीलवाडा ,** को प्रेषित कर निवेदन है कि, उक्त समाचार की तथ्यात्मक विवरण समाचार पत्र में प्रकाशित कराने का श्रम करावे ।

क्षेत्रीय अधिकारी

Signature Not Verified
Digitally signed by Deepak Dhanetwal
Designation : Senior Environmental Engineer
Date: 2026.02.06 23:11:23 IST



RajKaj Ref No.: 20398621

# सत्यापन प्रतिवेदन

सन्दर्भ- दैनिक भास्कर समाचार पत्र में दिनांक 06.02.2026 को शीर्षक "प्रदूषित पानी से 7 गांवों की 600 बीघा जमीन बंजर" प्रकाशित खबर |

उक्त समाचार के संदर्भ में समाचार में वर्णित स्थलों का मौका निरीक्षण इस कार्यालय के अधिकारियों द्वारा दिनांक 06.02.2026 को किया गया। निरीक्षण के दौरान प्राप्त तथ्यों का विवरण निम्नानुसार है:

1. मेसर्स सल्ज़र प्रोसेस के पास एकत्रित पानी के 2-3 स्थानों पर टीडीएस मापा गया जिनका मान लगभग 1600-2500 पीपीएम तथा एक स्थान पर टीडीएस लगभग 3500 पीपीएम (जिसकी मात्रा काफी कम थी) की सीमा में पाया गया। उक्त पानी की सतह पर हरी काई (Green Algae) जमी हुई पाई गई। पानी के टीडीएस मान एवं काई की उपस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए प्रथम दृष्टया यह औद्योगिक अपशिष्ट (Industrial Effluent) प्रतीत नहीं होता है। विस्तृत विश्लेषण (Detailed Analysis) हेतु उक्त एकत्रित पानी का सैंपल (टीडीएस 3500 पीपीएम वाला पानी) भी लिया गया है जिसको विश्लेषण हेतु इस कार्यालय की प्रयोगशाला में जमा करवा दिया गया है।
2. मेसर्स कंचन इंडिया लिमिटेड के पीछे स्थित एक खेत में किसी भी प्रकार का औद्योगिक अपशिष्ट एकत्रित पाया नहीं गया। साथ ही, गुड्डा नाला, जो कि मेसर्स कंचन इंडिया लिमिटेड के मध्य से होकर गुजरता है, के पानी का टीडीएस लगभग 1200 पीपीएम पाया गया, जो कि प्रथम दृष्टया औद्योगिक अपशिष्ट प्रतीत नहीं होता है।
3. प्रकाशित समाचार में वर्णित इकाई मेसर्स साईलीला प्रोसेसर को मंडल द्वारा जारी सञ्चालन सम्मति दिनांक 16.02.2022 को जारी की गयी थी, जिसमे इकाई को बायलर और थेर्मोपैक पर 800 $mg/Nm^3$ के मानक निर्धारित करने हेतु निर्देशित किया गया था जिसकी अनुपालना में इकाई के बायलर और थेर्मोपैक की जाच मंडल प्रयोगशाला द्वारा दिनांक 17.09.2025 को की गयी थी जिसमे इकाई द्वारा PM 513 तथा 416 $mg/Nm^3$ पाए गये जो कि संचालन सम्मति में निर्देशित मानको के अनुरूप है| इसके अतिरिक्त वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के क्रम में इकाई द्वारा वर्तमान में बायलर और थेर्मोपैक पर प्रदुषण नियंत्रण व्यवस्थाओ का उन्नयन किया जा रहा है तथापि समाचार में वर्णित उक्त इकाई द्वारा पास स्थित भूमी के बंजर होने के सम्बन्ध में संभावित कारणों पर टिप्पणी हेतु कृषि विभाग को इस कार्यालय द्वारा पत्र प्रेषित किया जा रहा है। (प्रति संलग्न है)
4. प्रकाशित समाचार में वर्णित स्वास्थ्य सम्बंधित बिन्दुओ के सत्यापन एवं विशेषज्ञ टिप्पणी हेतु स्वास्थ्य विभाग से जाँच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निवेदन किया जा रहा है |

उक्त प्रकरण के क्रम में यह भी उल्लेखनीय है कि दिनांक 16.09.2025 को जिला कलेक्टर, भीलवाड़ा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में महोदय द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में भीलवाड़ा

में स्थित समस्त प्रोसेस हाउस इकाइयों में स्थापित बोरवेल्स से जल नमूने एकत्रित करवाए गए थे। जिनका विश्लेषण मंडल की क्षेत्रीय प्रयोगशाला कोटा से करवाया गया था एकत्रित जल नमूनों के विश्लेषण में किसी भी इकाई के बोरवेल में किसी भी प्रकार के मेटल ट्रेसेस (Metal Traces) नहीं पाए गए जिससे इकायों द्वारा अपशिष्ट जल को बोरवेल में छोड़े जाने की सम्भावना का होना नही प्रतीत होता है | इस क्रम में विशेषज्ञ टिप्पणी हेतु समस्त रिपोर्टों संलग्न करते हुए भू जल विभाग से औद्योगिक अपशिष्ट के भूजल पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध रिपोर्टों के आधार पर टिप्पणियाँ मांगी गई थीं। भू-जल विभाग द्वारा प्रस्तुत जांच रिपोर्ट की प्रति संलग्न है।

निरीक्षण के दौरान लिए गये जी. पी. एस. मय फोटोग्राफ्स संलग्न है।

(जितेन्द्र सिंह मीना)
सहायक पर्यावरण अभियंता

C/s

(दीपक धनेटवाल)
क्षेत्रीय अधिकारी

# Office of the Incharge Hydrogeologist, S&R
# Ground Water Department, Bhilwara

**srgwdbhilwara@gmail.com**

S.No. 232 Date: - 16.12.2025

RO

RSPCB, Bhilwara

Subject: - Comments on Ground Water Aquifer Quality

Reference: - Your letter no 2627 dated 19.11.2025. & following mails dated 26.11.2025, 05.12.2025.

Sir,

Groundwater department collect groundwater sample from some key wells from specific locations and then analysis these samples for parameters like E.C., TDS, pH, $Na^{+1}$, $K^{+1}$, $Ca^{+2}$, $Mg^{+2}$, $Cl^{-1}$, $SO_4^{2-}$, $CO_3^{2-}$, $HCO_3^{-1}$, $NO_3^{-1}$, $F^{-1}$, Total Hardness, Total Alkalinity, Na% etc. but does not deal with BOD, COD and heavy/ trace metals at present.

Kindly find the comments you asked in attached annexure regarding Ground Water Aquifer Quality of concern area.

Enclosed: As above

(M.P.Goswami)
I/C Hydrogeologist
GWD, Bhilwara

The Bhilwara district is primarily composed of the Bhilwara Supergroup of rocks, which are the oldest rock types in Rajasthan, dating back to the Archean age (around 2.5 to 3.3 billion years old). The majority of these rocks are metamorphic in nature, including schists and gneisses, which significantly affect the local groundwater parameters.

The intrinsic properties of the Archean-age metamorphic lithologies comprising the Bhilwara Supergroup exert profound controls on both the quantitative hydrogeological parameters and the *geochemical signature* of the local groundwater resources. The dominant lithologies, namely schists and gneisses, constitute a prototypical "hard rock" aquifer system characterized by low matrix permeability, where fluid dynamics are governed almost exclusively by secondary porosity.

The chemical quality of the groundwater is a direct manifestation of prolonged water-rock interaction (WRI) within the specific mineral assemblages of the Bhilwara Supergroup. The residence time of groundwater within these geochemically active matrices dictates the final water chemistry.

Elevated Total Dissolved Solids (TDS) and Hardness due to the dissolution of calc-silicate minerals, amphiboles, pyroxenes, and feldspars lead to the mobilization of major cations $Ca^{++}$, $Mg^{++}$, $Na^{+}$, $K^{+}$ and anions $HCO_3^{-}$ , $SO_4^{--}$. This process inevitably increases water hardness and overall salinity, often classifying the water as "hard to very hard.

A general observation in certain specific studies suggest that groundwater quality degrades with both time and depth in metamorphic geological setups, although not always.

The presence of accessory $F^{-}$ bearing minerals (e.g., fluorapatite, biotite, hornblende) within the gneissose and schistose matrix is a primary driver for Geogenic Contamination Potential (Fluoride and Trace Elements). Fluoride concentrations frequently exceed the Bureau of Indian Standards (BIS) permissible limits in localized pockets; however, it should not be oversimplified.

The Bhilwara district is renowned for its metallogenic provinces. Weathering conditions can facilitate the release of potentially hazardous trace elements, including As, Pb, Mn, Fe, and Ni, into the aqueous phase but as department do not do analysis for heavy / trace metals so no comments can be made in this regard.

Based on a comparative analysis of the provided data, it can be inferred that while water hardness is primarily attributable to Geogenic factors, the abrupt fluctuations in parameters such as pH, Electrical Conductivity (EC), Total Dissolved Solids (TDS), and Chloride ($Cl^-$) might suggest anthropogenic influence. Furthermore, the observed discrepancies may be exacerbated by hydrogeological variations; specifically, the Groundwater Department's observation wells monitor shallow aquifers, whereas the samples in question were retrieved from tube wells tapping deeper aquifer zones. These stratigraphic differences in sampling depth and spatial distribution likely account for the variance in the analytical results.

Attached is the recent hydro-chemical inventory of nearest possible this department's observation wells of the subject area's monitoring network for your observation, decision and further study if needed.

| Sr. No. | Block | Location | Latitude | Longitude | EC | TDS | pH | $Ca^{+2}$ | $Mg^{+2}$ | $Cl^-$ | $SO_4^{-2}$ | $F^-$ | TH | TA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | µS/cm | mg/L | | mg/L | mg/L | mg/L | mg/L | mg/L | mg/L | mg/L |
| 1 | Hurda | Gulabpura | 25.92056 | 74.65759 | 2040 | 1167 | 8.20 | 14 | 16 | 262 | 1 | 1.50 | 100 | 670 |
| 2 | Hurda | Lamba | 25.90389 | 74.61099 | 6560 | 3964 | 8.10 | 220 | 187 | 1390 | 1057 | 0.98 | 1320 | 60 |
| 3 | Hurda | Sareri | 25.72056 | 74.60494 | 1020 | 547 | 7.80 | 14 | 27 | 106 | 1 | 0.64 | 145 | 360 |
| 4 | Mandal | Mandal | 25.45389 | 74.56805 | 3000 | 1636 | 8.80 | 14 | 51 | 553 | 24 | 3.96 | 245 | 680 |
| 5 | Mandal | Dhunwala | 25.52056 | 74.55027 | 3000 | 1644 | 8.60 | 18 | 44 | 567 | 19 | 3.14 | 225 | 670 |
| 6 | Suwana | Arjiya | 25.43722 | 74.63318 | 3730 | 2097 | 8.00 | 68 | 108 | 1036 | 207 | 1.04 | 615 | 180 |
| 7 | Suwana | Pur | 25.30389 | 74.53738 | 1350 | 727 | 8.80 | 44 | 55 | 262 | 48 | 0.00 | 335 | 250 |
| 8 | Suwana | Hameer Garh | 25.18722 | 74.62379 | 1080 | 558 | 8.38 | 44 | 49 | 92 | 43 | 0.00 | 310 | 340 |
| 9 | Suwana | Mandpiya | 25.28722 | 74.63604 | 1010 | 530 | 8.80 | 22 | 61 | 78 | 115 | 0.00 | 305 | 250 |
| 10 | Suwana | Nogawan | 25.27056 | 74.51533 | 7380 | 4983 | 7.70 | 112 | 17 | 468 | 2786 | 0.90 | 350 | 110 |

(M.P.Goswami)
I/C Hydrogeologist
GWD, Bhilwara

Latitude: 25.438829
Longitude: 74.590044
Elevation: 444.69±20.8 m
Accuracy: 4.7 m
Time: 06-02-2026 09:00
Note: Sulzer
Powered by NoteCam

Latitude: 25.438154
Longitude: 74.590872
Elevation: 444.7±13.6 m
Accuracy: 174.4 m
Time: 06-02-2026 09:06
Note: Sulzer
Powered by NoteCam

Latitude: 25.433874
Longitude: 74.595066
Elevation: 441.24±60.0 m
Accuracy: 2.855 m
Time: 06-02-2026 09:35
Note: Behind Kanchan
Powered by NoteCam

Latitude: 25.431538
Longitude: 74.594505
Elevation: 440.54±12.2 m
Accuracy: 25.58 m
Time: 06-02-2026 09:25
Note: Sulzer farm
Powered by NoteCam

Latitude: 25.433851
Longitude: 74.595064
Elevation: 441.24±60.2 m
Accuracy: 3.59 m
Time: 06-02-2026 09:35
Note: Behind Kanchan
Powered by NoteCam

दैनिक भास्कर

भीलवाड़ा भास्कर 06-02-2026

भीलवाड़ा, शुक्रवार, 6 फरवरी, 2026 फाल्गुन, कृष्ण पक्ष-पंचमी, 2082

**भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट-1** प्रोसेस हाउस से केमिकल का पानी खुले में छोड़ रहे, **खेतों की पैदावार 50 फीसदी तक घटी**

# प्रदूषित पानी से 7 गांवों की 600 बीघा जमीन बंजर

प्रहलाद तिवारी | भीलवाड़ा

मांडल के नजदीक स्थित प्रोसेस हाउसों के रसायनयुक्त पानी व चिमनी से उगलने वाली राख क्षेत्र में अभिशाप बनी हुई है। दूषित पानी ने आस-पास के रेलवे स्टेशन, गुढ़ा, मांडल चौराहा, लाल खां जी का खेड़ा, शेख जी का खेड़ा, संतोकपुरा व गुर्जरों का गुढ़ा गांव के करीब 100 बीघा जमीन और कुओं को बर्बाद कर चुका है।

हालात इतने भयावह हैं कि कभी उपजाऊ रही जमीन आज बंजर बनती जा रही है। खेतों की पैदावार 50 फीसदी तक गिर चुकी है। ग्रामीणों के अनुसार, गत 15 साल में क्षेत्र के करीब 25 लोगों की कैंसर से मौत हो चुकी है। ग्रामीणों का कहना है कि फैक्ट्रियों से निकलता काला पानी खेतों पर असर डाल रहा है। जिससे मिट्टी की उपज खत्म हो रही है। हालात यह हैं कि कुओं का पानी पीना तो दूर, नहाने तक के लायक नहीं बचा। पानी से बदबू आती है।

## हालात • सल्जर प्रोसेस के पास दूषित पानी, टीडीएस 3500 तक

गुढा गांव के पास नाले में बहता दूषित पानी

मांडल रेलवे ओवरब्रिज के पास स्थित सल्जर प्रोसेस हाउस के पास बड़े गड्ढे में दूषित पानी जमा होने की शिकायत सामने आई है। जिसका पानी का नमूना लेकर प्रदूषण नियंत्रण मंडल से जांच कराई। जांच में पानी का कुल घुलित ठोस (टीडीएस) स्तर 3500 मिलीग्राम प्रति लीटर पाया गया, जो सुरक्षित सीमा से काफी अधिक है।

**कंचन प्रोसेस के पीछे कुएं के पानी का टीडीएस 2500...** भास्कर ने कंचन प्रोसेस हाउस के पीछे खेतों का दौरा किया। यहां किसानों ने बताया उनकी पैदावार में कमी आई है। कुओं के पानी के नमूने की जांच में टीडीएस 2500 तक पहुंच गया।

## असर • ट्यूबवैल में काला पानी आ रहा, मवेशी तक नहीं पीते

*साईंलीला प्रोसेस हाउस के पीछे उनके खेत स्थित हैं, जहां वे बरसों से खेती करते आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि औद्योगिक इकाई की चिमनी से उड़ने वाली राख खेतों में फैल रही है, जिससे फसलों पर राख की परत जम जाती है। राख जमने के कारण फसलों की वृद्धि प्रभावित हो रही है और उनकी पैदावार में करीब 50 प्रतिशत तक गिरावट आ चुकी है। किसान का कहना है कि पहले जहां फसल अच्छी होती थी, अब उत्पादन लगातार घटता जा रहा है, जिससे उनकी आजीविका पर सीधा असर पड़ रहा है। -बाबू लाल गुर्जर, ग्रामीण*

*दूषित पानी की समस्या के चलते गुढ़ा गांव में हालात गंभीर होते जा रहे हैं। क्षेत्र में जमीन का पानी भी प्रदूषित हो चुका है। गुढ़ा गांव में लगे ट्यूबवेल से दूषित पानी निकल रहा है, जिससे मवेशियों ने भी उस पानी को पीना छोड़ दिया। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट एवं रसायनों के कारण भूजल दूषित हो रहा है। राधेश्याम गुर्जर, ग्रामीण*

साईंलीला प्रोसेस के पीछे जमीन बंजर होने से खेती छोड़ी।

### राख से छतों पर कपड़े सुखाना हुआ दूभर

औद्योगिक इकाइयों से उड़ने वाली राख के कारण ग्रामीणों की परेशानी बढ़ती जा रही है। ग्रामीण राधेश्याम गुर्जर, भूपेंद्र सिंह, यशपाल, शिवलाल, बाबूलाल, गणेश एवं विनोद ने बताया कि फैक्ट्रियों से उड़कर आने वाली राख मकानों की छतों पर जमा हो जाती है। ऐसे में छतों पर कपड़े सुखाने पर उन पर भी बारीक राख की परत जम जाती है। इससे न केवल दैनिक कार्य प्रभावित हो रहे हैं, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का खतरा भी बढ़ रहा है। दूसरी ओर फैक्ट्रियों की चिमनी से निकलने वाली राख लोगों की सेहत को नुकसान पहुंचा रही है। गांवों में सांस की बीमारियां, आंखों में जलन, चर्म रोग और लगातार खांसी आम हो गई है। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।